

आत्महत्या

लेखक- अनिष मौर्या



आत्महत्या

निर्देशक

- ❖ आशुतोष मिश्रा B.Tech (AKTU)
- ❖ चन्दन विश्वकर्मा B.Tech (AKTU)

उपदेशक

- ❖ पूजा मौर्या M.T.T.M (BHU)
- ❖ अभिनव मिश्रा B.C.A (MGKVP)

लेखक

- ❖ अनिष मौर्या B.Tech (AKTU)
(+918081521221)
(stp9512@gmail.com)

Bharati Prakashan

45 Dharma Sangh Complex, Durgakund
Varansi, Uttar Pradesh, 221005


प्रस्तावना

आत्महत्या, एक ऐसी हत्या जो अपनी इच्छानुसार की जाती है इसके अर्थ में कितनी सच्चाई है, इसका जिक्र करते हुए लेखक एक घटना को हमें बता रहे हैं,

इस घटना के माध्यम से एक बात को लेखक स्पष्ट कर रहे हैं की सभी आत्महत्या के पीछे एक हत्यारा छुपा होता है, हर बार वो दिखाई दे जरूरी नहीं।

सर्वे के अनुसार 12 से 35 वर्ष की आयु के लोग अधिक आत्महत्या करते हैं, प्रतिवर्ष इसका आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है, समाज और परिस्थितियां पीड़ित व्यक्ति सोचने और समझने की क्षमता को नष्ट कर देती है, जिससे वो आसानी से इन गंभीर परिणामों को अंजाम दे देते हैं, लेखक द्वारा लिखित घटना, आत्महत्या की परिभाषा को बदलते हुए कह रहा है- जब समाज और परिस्थितियों के चोट से किसी व्यक्ति की हत्या होती है, तब उस हत्या को आत्महत्या नाम दिया जाता है।

अनन्या सिंह (मुख्य सलाहकार)



अनन्या सिंह

आत्महत्या

ठंडी के हल्की धूप में छत पर बैठकर चाय की चुस्कियों का आनंद लेते हुए अपने लिखे पंक्तियों को गुनगुना रहा था, चाय को खत्म करके जैसे ही अखबार को उठाया, तभी मैंने गली में किसी की रोने की आवाज सुनी, मैं अचंभित होकर बारजे की तरफ झुका... तब देखा, यादव जी अपने इकलौते लड़के (छोटू) को पीटते हुए ला रहे थे,

मैंने यादव जी से ठहाके से पूछा- क्या हुआ चाचा क्यों सुबह-सुबह पीट रहे हो। बहुत लोगों ने यादव जी से पीटने का कारण पूछा, लेकिन सबकी बातों को अनसुना करते हुए और छोटू को पीटते व खींचते हुए अपने घर की तरफ ले गए। छोटू का पूरा कपड़ा भीगा हुआ था।

अगली सुबह, जब मैं धूप में बैठ कर पढ़ रहा था तब माँ ने फटकारते हुए बोला- पिछले सात से आठ दिनों से तुमने नहीं नहाया हुआ है पता नहीं कैसे तुम्हारा पढ़ने में मन लगता है? आज अच्छी धूप निकली हुई है जाओ आज तो नहा लो.

मुझे भी अंदर से नहाने की इच्छा जागृत हो ही रही थी की मां ने आकर सुना दिया मैंने मां से दो शर्त पर नहाने का वादा किया।

कैसे- तैसे करते हुए मां ने मेरे शर्तों को मान लिया मेरा पहला शर्त अगले एक हफ्ते तक मुझे नहाने के लिए परेशान नहीं किया जाएगा और दूसरा नहाने का पानी गर्म रहना चाहिए।

कुछ देर बाद मां चिल्लाते हुए बोली- पानी गर्म हो गया है, नालायक नहा ले।

मैं किचन से गर्म पानी लेने गया, मां ने मेरा आलस देखते हुए कहा- यादव जी का लड़का, जो मरने के लिए नदी के ठंडे पानी में कूद गया और एक तुम हो, जो हफ्तों में एक बार नहाते हो और पानी भी गर्म चाहिए, जिज्ञासा से मां की तरफ देखा और पूछा- क्या इसीलिए यादव जी अपने लड़के को पीटते हुए ले जा रहे थे?

मां ने कहा- हां कुछ ऐसा ही सुनने में आ रहा है गांव के बाहर शर्मा जी की लड़की के साथ उसका प्रेम-संबंध था इसी विषय में कुछ बात थी, हमें भी सही से नहीं पता,

जाओ नहाओ पानी ठंडी हो रही है, फालतू की बातें हैं ध्यान मत दो।

मुझे इस विषय में जानने की बहुत जिज्ञासा होने लगी लेकिन मैं जानता था, अगर मां से एक और भी शब्द इस विषय में पूछता, तो मां मेरे लिए घातक साबित हो सकती थी, इसीलिए मैंने गर्म पानी को चुपचाप उठाया और लेकर नहाने चला गया।

नहाने और खाने के बाद मैंने यादव चाचा के घर जाने के लिए सोचा और बिना किसी को बताए यादव चाचा के घर निकल पड़ा, घर के बाहर से चाचा-चाचा कह कर दो बार बुलाया- इतने में छोटू घर के अंदर से शर्माते हुए देखा और बोला- भईया पापा तो अभी नहीं है, ऐसे ही कहीं गए हुए हैं, कोई काम भईया ?

मैंने कहा- नहीं बस ऐसे ही (मैं बोलते- बोलते घर के अंदर चल रहा था) वो मुझे अंदर आते देख, अपने रूम में ले गया और बैठाकर यहां-वहां की बातें करने लगा परंतु मुझे इन बातों से कोई लेना-देना नहीं था, हमें जिज्ञासा तो सिर्फ उस बातों की थी,

मैंने बात ही बात में पूछा- छोटू उस दिन क्या बात थी?
आखिर हुआ क्या था?

शर्माते हुए बोला- अरे भईया कुछ नहीं,
मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला- बड़ा भाई समझो
अपना,

उसके आंखों में मैंने आंसु के झलक को देखा, उसने अपना
आंख मिचते हुए बोला- भईया..... मैं मयूरी के बिना नहीं
रह सकता, और वो भी हमसे बहुत प्रेम करती है।

अचानक उसके मुंह से ऐसी बातें सुनकर मैं डर सा गया।
उसे शांत कराते हुए बोला- देखो छोटू पहले पढ़ाई पर
ध्यान दो, कल तुम अच्छा करो तो शायद मयूरी तुम्हारी
हो सकती है।

मैंने पूछा- कितने सालों से तुम लोग?

बताया- तीन सालों से.....

मैं कुछ और पुछने ही वाला था, कि यादव चाचा आ चुके
थे, उन्होंने मुझे देखते ही बोला- अरे लेखक साहब यहां
कैसे?

मैं भी हंसते हुए बोला- अरे चाचा बस ऐसे ही !

चाचा छोटू की तरफ देखते हुए बोले- लेखक साहब को पानी दाना कराया कि नहीं? छोटू के बोलने से पहले ही मैं बोला- अरे चाचा, मैं खाना खाकर आया हूं ...

चाचा ने छोटू को इशारे से पानी लाने के लिए कहा , और फिर हमसे बोले- और पढ़ाई-लिखाई कैसा चल रहा है?

मैंने कहा- बस चल ही रहा है,

काफी देर तक हम लोगों की बातें हुई, फिर मैं घर आ गया, लेकिन चाचा ने उस विषय पर कोई बात नहीं की।

गांव के काफी लड़कों के अपेक्षा, मुझे गांव के सभी परिवार से बहुत इज्जत मिलती थी इसका कारण, मेरा गांव मे अधिक ना रहना था, मैं काफी वर्षों से शहर में रहकर पढ़ता था, यूंही छुट्टियों को बिताने गांव में आता था।

मेरे दिमाग में अभी भी छोटू की बातें गूंज रही थी।

एक नाबालिक लड़का जब प्यार में विभोर होता है तब उसे समझना और समझाना कितना मुश्किल होता है अब मैं जान चुका था।

पता नहीं क्यों, परंतु मेरे अंदर मयूरी को देखने और उससे बात करने की इच्छा जागृत हो रही थी,

शाम को मां ने मुझे सब्जी लाने के लिए बाजार भेजा.
सब्जी लेकर लौटते समय मैंने मयूरी को उसके बालकनी
पर उदास चेहरे में देखा,

उसके श्रृंगार रूपी चेहरे पर ऐसा करुण रस टपक रहा था
जिसका कोई अनुमान न था, वो जिस तरफ देख रही थी
वही देख रही थी, मानो किसी सोच में डूब चुकी थी. मुझे
उस पर दया आ रही थी।

मैं घर आया, मां को सब्जी दिया, बचे हुए पैसे मांगने
पर मां को तीन-पाच बताने लगा,
मां ने कहा- ठीक है, जब तुम कमाओगे, तब मैं भी ऐसा
करूंगी,

हां हां ठीक है, कहते हुए मैं अपने कमरे में चला गया।
रात के खाने के बाद मैं अपनी मां के कमरों में पढ़ता था
मैं और मां एक साथ सोते थे, पापा के साथ मेरा छोटा
भाई सोता था, मुझे देर रात से सोने की आदत थी, मैं
पढ़ता, मम्मी जल्दी सो जाती थी, क्योंकि उन्हें जल्दी
उठना होता था.

उस दिन सोचा, अगर मां से कुछ सवाल जवाब करना है
तो उनके साथ ही सोना पड़ेगा, मैं भी लेट गया।

मम्मी ने बोला- आज नहीं पढ़ना क्या?

मैंने बोल दिया- आज मन नहीं कर रहा,

इतना बोलते ही मम्मी बोली- तब मेरा पैर ही दबा दो, मैं मां के पैरों को दबाने लगा, फिर क्या- मां ने यहां-वहां की बातें करना शुरू कर दिया जिसको जानने की मेरी बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी परंतु हां में हां कर रहा था फिर मैंने ही पूछा- मम्मी यादव जी के पास कितना खेत है?

माँ ने कहा- दस बीघा के करीब होगा, लोग बताते हैं इनके माता-पिता बचपन में ही दुनिया छोड़ चुके थे, अच्छा परिवार ना होने के कारण इन्हें बहुत कष्ट झेलना पड़ा, इसलिए उन्होंने अपना गांव छोड़कर इस गांव में आकर बस गए और अपनी मेहनत से यहां बहुत कुछ बना लिया है इनका व्यवहार बहुत ही अच्छा है. पता नहीं कैसे उनका लड़का गलत रास्ते पर निकल पड़ा?

पढ़ने में तो ठीक था, हमेशा टॉप भी करता था लेकिन कब बिगड़ गया पता ही नहीं चला !

एक लड़की की वजह से जान देने जा रहा था उसे अपनी जन्म देने वाली मां पिता का कोई फिक्र ही नहीं है.

उस दिन वहां बांध पर कोई ना देखा होता तो क्या से क्या हो जाता?

मम्मी शर्मा जी की एक ही लड़की और एक ही लड़का है ना?

हां, लड़की का तो पता नहीं पर लड़का पढ़ने में अच्छा था. अभी दिल्ली में जॉब करता है।

शर्मा जी थोड़े कोमल स्वभाव के हैं लेकिन उनकी पत्नी ज्वलनशील स्वभाव की औरत है,

मैंने मम्मी से पूछा- तुम्हें कैसे पता ?

कपड़ा सिलती है, एकाक बार मैंने भी कपड़ा सिलने के लिए दिया था दूसरे औरतों की बहुत बुराई कर रही थी, शर्मा जी का राजनीतिक लोगों से अधिक संबंध था इसीलिए उनकी पहचान काफी दूर-दूर तक थी,

मैं सोचने लगा - मैं क्यों इतना इस चक्कर में परेशान हूं? मां की तरफ देखा मां पूरी तरीके से सो चुकी थी.

आज मैं भी थक चुका था, मुझे भी नींद आ रही थी, बहुत दिनों के बाद मैं भी आज जल्दी सो गया.

अगले दिन, मैं छोटू को खेत में अकेला बैठे हुए देखा- छोटू को अकेला देखकर बिना कुछ सोचे मैं भी खेत की

तरफ निकल गया, पास पहुचकर थोड़ा अनजान बनते हुए बोला- अरे छोटू खेत में.....

छोटू पलट कर देखते हुए- भईया, वो खेतों में पानी जा रहा था वहीं देखना था, पापा किसी काम से शहर गए हुए हैं.

मेरी हिम्मत नहीं हुई उससे कुछ पुरानी बातें पूछने की बस इतना पूछा- अब ठीक है ना सब, कोई दिक्कत तो नहीं?

थोड़ा मायूसी से जवाब दिया- नहीं भैया, मैं ठीक हूं फिर भी मैं उसे समझाते हुए बोला- धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो जाएगा, तुम बस पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दो. वो मेरे बातों में हां में हां मिला रहा था, इतना सब कह कर मैं अपने खेत को देखते हुए, दूसरी तरफ से घर निकल आया,

कुछ देर बाद जब मैं कुछ खाने के लिए छत पर गया, तब भी छोटू खेत में ही था, मम्मी भी उसे देख रही थी मम्मी बताने लगी- छोटू पढ़ने में भी ठीक है, और घर के कामों को भी जिम्मेदारियों से करता है, वो लड़की

दुष्ट होगी, ऐसी लड़कियों के चक्कर में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहिए, मां उसे बहुत भला बुरा कोश रही थी.

मैंने हंसते हुए कहा- तुम्हारे सिर्फ दो बेटे हैं, तो बोली आएगी ही, लेकिन मम्मी इसमें किसी की गलती नहीं है उम्र के इस पड़ाव में बच्चे थोड़ा भटकते ही है.

खैर छोड़ो- मुझे कुछ खाने के लिए दो,
मैंने बिस्किट का पैकेट लेकर चल दिया।

मैं सोच रहा था, जैसे-जैसे दिन बीत जाएंगे लोग इस घटना को पूरी तरीके से भूल जाएंगे, लेकिन समाज के कुछ विचलित लोग ऐसा होने देंगे तब ना, जहां देखो वहां गांव के लोगों उसे कोस रहे थे, जैसे कोई बड़ा अपराध कर दिया हो यहां तक कि उसके पिता के परवरिश को कोसा जा रहा था,

गांव के सभी अभिभावक छोटू से दूर रहने की सलाह अपने बच्चों को देने लगे, यहां तक कि गांव के बच्चे उसे आशिक कहकर ताना मरने लगे,

हम उस दशक में जी रहे थे जहां प्रेमी और प्रेमिका की कहानी सिर्फ पर्दे पर अच्छी लगती है, असल जिंदगी में

नहीं, समाज पूरी तरीके से देखने का नजरिया ही बदल देती है ऐसा लगता है मानो कोई अपराधी हो, मैंने भी कुछ लोगों को उसके परिवार को भला बुरा कहते हुए सुना, लेकिन मैं उम्र के उस पड़ाव पर था जहां से मैं कुछ नहीं बोल सकता था फिर भी 21 वर्ष की आयु में मैं इस समाज को पूरी तरीके से पहचान चुका था अब तक के दौर से हमे ऐसा लगता है कि हम इस समाज को नहीं बदल सकते हैं.

कुछ लोगों का कहना है- हम बदलेंगे, समाज बदलेगा. लेकिन ऐसा कभी नहीं हो सकता, हमारे बदलने से समाज कभी नहीं बदल सकता।

वो समाज मयूरी के ऊपर इज्जत उछालने की लांछन लगा रही थी, जो आपस की लड़ाईयों में मां बहन की गाली का उपयोग करते हैं पता नहीं उनके घर की औरतों को, उनके ही घर में, कितनी इज्जत मिलती होगी?

इस समाज ने कितनों को नकारा, कितनों को आवारा, किसी को बेचारा, तो किसी को पागल बना दिया मैंने तो अपनी आंखों से कितने घरों को उजड़ते हुए देखा है जिसका पूर्ण रूप से श्रेय समाज ने ले लिया।

और यही कारण भी था मैं समाज और समाज के अधिकतर लोगों से उचित दूरी बनाकर रखता था।

आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी मैं दवा खाकर अपने कमरे में सुबह से ही लेटा हुआ था, अचानक मां दौड़ते हुए कमरे की तरफ आई और हांफते हुए बोली- यादव जी का लड़का जहर खा लिया,

मैं दौड़ते हुए उसके घर की तरफ भागा, यादव जी छोटू को गोद में उठाए गाड़ी पर बैठ रहे थे, छोटू की हालत नाजुक दिख रही थी, छोटू की मां चीखते हुए रो रही थी, गांव की औरतें उन्हें शान्त करा रही थी, काफी भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी, उधर यादव चाचा और गांव के कुछ लोग छोटू को लेकर हॉस्पिटल पहुंचे।

घर के बाहर भीड़ बढ़ती जा रही थी, भीड़ में खड़े बूढ़े, जवान, बच्चे सभी दोनों परिवार के किसी न किसी व्यक्ति को कोस रहे थे, कोई बच्चे की परवरिश पर सवाल उठा रहा था, कोई शर्मा जी के लड़की पर सवाल उठा रहा था तो कोई छोटू को सच्चा आशिक बताकर मजाक उड़ा रहा था उस भीड़ के एक कोने में मैं भी खड़ा था मुझे अंदर ही अंदर इतना गुस्सा आ रहा था की मैं सबके सवालों

का जवाब चिल्ला-चिल्ला कर दूं, पर मैं जान रहा था, यह समाज है, इसे नहीं समझाया जा सकता।

दूसरी तरफ- एक मां जो अपने बेटे के लिए तड़प रही थी जिसे समझाया जा रहा था कुछ नहीं होगा उसके लड़के को।

तीन-चार घंटे के उपरांत, डॉक्टर ने छोटू को मृत घोषित कर दिया, गाव मे चारों तरफ मातम सा छा गया, एक मां की चीखने की आवाज पूरे गांव में गूंज रही थी भीड़ और भी बढ़ने लगी.

कुछ देर बाद, एंबुलेंस की एक गाड़ी आई जिसमे दो-तीन लोगों ने पकड़ कर पहले चाचा को निकाला, चाचा अपने आप को संभाल नहीं पा रहे थे, फिर छोटू के पार्थिव शरीर को बाहर निकाला गया,

चाची दौड़ते हुए आई और छोटू के शरीर पर लेट कर जोर-जोर से रोने लगी।

हालात को देखकर आंखों के आंसू रुक ही नहीं रहे थे, मैं भी रो रहा था, छोटू को ऐसा नहीं करना चाहिए था.

पुलिस आई और पंचनामा करने लगी मौके पर ही पुलिस ने छोटू के कमरे की तलाशी ली जिसमें एक आखरी पत्र

और उसका टूटा हुआ मोबाइल फोन मिला, उस पत्र में मां-पिता को प्रणाम करते हुए उनसे माफी मांगी गई थी और आखिरी इच्छा में गांव के लोगों से अपील की गई थी की मेरे और मयूरी के परिवार को परेशान नहीं किया जाए इस गलती का जिम्मेदार मैं हूं, इसीलिए मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं है।

एक बार फिर कर दिया ना कमाल इस समाज ने, 14 वर्ष की उम्र में छोटी ने अंतिम सांस ली।

एक तरफ प्रेमिका से बिछड़ना दूसरी तरफ समाज के ताने, छोटी का अकेलापन इन भारों को सह नहीं पाया पुलिस ने यादव जी से पूछताछ की तब उन्होंने बताया - शर्मा जी की लड़की से प्रेम करता था, फोन पर बात करते हुए मयूरी के मम्मी ने उसे पकड़ लिया था और उन्होंने छोटी को पुलिस में पकड़वाने के लिए कहा, तब वो डर कर एक बार पहले भी आत्महत्या करने का कोशिश कर चुका था।

छोटी ने उस समय सामाजिक इज्जत को बचाने के लिए अपने आप को मारना ठीक समझा, समाज के कटीली नियम किसी भी व्यक्ति के सोचने और समझने की

क्षमता को नष्ट कर सकती है, फिर तो वह एक नाबालिग बच्चा था।

आगे बताते हुए बोले- कल शाम को बजार जाते समय रास्ते में कुछ लड़के हमें आशिक का बाप बोल कर हंस रहे थे मैं घर आकर गुस्से में छोटू को दो थप्पड़ मार दिया था, आज दोपहर, घर में रखे कीटनाशक दवा को खा लिया, इतना कहने के बाद फूट-फुटकर रोने लगे। समाज के लोगों और परिस्थितियों ने छोटू को मरने के लिए मजबूर कर दिया।

इतने में पता चला की शर्मा जी के घर में ताला लगा हुआ है, वो अपने पूरे परिवार के साथ कहीं जा चुके थे पुलिस पंचनामा करके आत्महत्या करार देकर चली गई। रीति रिवाज के अनुसार छोटू की अंतिम संस्कार की गई अगले दिन अखबार के पन्नों पर एक हेडलाइन - **प्रेमी ने दूसरे प्रयास में किया सफल आत्महत्या।**

यह समाज स्वार्थ के लालच में इतना खो गया है जहा से उससे कुछ भी दिखाई नहीं देता इसी कारण से मानवता धीरे-धीरे पूर्ण रूप से खो रही है।

इन सब बातों को अब लगभग हफ्तो बीत रहे थे, फिर भी गाव में चारों तरफ एक मातम सा सन्नाटा छाया हुआ था, फिर एक सुबह, एक और बात सुनने को आई चाचा-चाची नहीं रहे, उन्होंने भी आत्महत्या कर ली.

क्या कब कैसे अब इन प्रश्न का कोई मतलब ही नहीं था? क्योंकि इस समाज और समाज के नियमों ने वर्षों की मेहनत को कुछ ही दिनों में पूर्ण रूप से उजाड़ कर फेंक दिया।

-आनिष मौर्या

